नन्दीश्वर द्वीप–पूजन

(पं. द्यानतरायजी कृत)

(अडिल्ल)

सरब परव में बड़ो अठाई परव है।
नन्दीश्वर सुर जांहिं लेय वसु दरव है।।
हमैं सकति सो नाहिं इहाँ करि थापना।
पूजैं जिनगृह–प्रतिमा है हित आपना।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ–जिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् ।

Chaitanya Vidhyaniketan
ज्ञानं सर्व समाधान कारणं
एक कदम स्वाध्याय की ओर
ભારતનું ગૌરવવંતુ તીર્થ સ્થાન
"ચૈતન્ય ધામ"
ચૈતન્યની ચેતનાને ચેતનવંતુ રાખવાનું ધામ

(अवतार)

कंचन-मणि-मयभृंगार, तीरथ-नीर भरा।
तिहुँ धार दयी निरवार, जामन मरन जरा।।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-तप-हर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं।
प्रभु यह गुन कीजै साँच, आयो तुम ठाहीं।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्य: संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरै सोहै।
सब जीते अक्ष-समाज तुम-सम अरु को है।। नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊँ फूलनसौं।
लहुँ शील-लच्छमी एव, छूटों सूलनसौं।।
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज इन्द्रिय-बलकार, सो तुमने चूरा।
चरु तुम ढिंग सोहैं सार, अचरज है पूरा।।नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति-प्रकाश, तुम तन माहिं लसै।
टूटै करमन की राशि, ज्ञान-कणी दरसै।।नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकार- विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु-धूप-सुवास, दश-दिशि नारि वरै।
अति हरष-भाव परकाश, मानो नृत्य करै।।नन्दी.।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविधि फल ले तिहुँ काल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिव-फल देहु दयाल, तुहि हम जाचत हैं।। नन्दी. ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिव-खेत, भूमि समरपतु हों।। नन्दी. ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

कार्तिक फाल्गुन साढ़ के, अन्त आठ दिन माहिं।
नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठाहिं।।

(लक्ष्मीधरा)

एकसौ त्रेसठ कोडि जोजन महा।
लाख चौरासिया एक दिश में लहा।।
आठमों द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।
चार दिशि चार अंजनगिरी राजहीं।
सहस चौरासिया एक दिश छाजहीं।।
ढोल-सम गोल ऊपर तले सुन्दरं।।भौन.।।

एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी।
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी।।
चहुँ दिशि चार वन लाख जोजन वरं।।भौन.।।
सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं।
सहस दश महाजोजन लखत ही सुखं।।
बावरी कौन दो माहिं दो रतिकरं।।भौन.।।
शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे।
चार सोलह मिलैं सर्व बावन लहे।।
एक इक सीस पर एक जिन मन्दिरं।।भौन.।।

बिम्ब अठ एक सौ रतनमयी सोहही।
देव-देवी सरव नयन मन मोहही।।
पाँच सौ धनुष तन पद्म-आसन परं।।भौन.।।
लाल नख-मुख नयन श्याम अरु स्वेत हैं।
श्याम-रंग भोंह सिर-केश छबि देत हैं।।
वयन बोलत मनों हँसत कालुष हरं।।भौन.।।

कोटि-शशि-भान-दुति-तेज छिप जात है।
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है।।
वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यक धरं।।
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिशि द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

नन्दीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करै।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)